भक्तामर स्तोत्र पूजन

जय जयति जय स्तोत्र भक्तामर पर सुख कारणम्।
जय ऋषभ देव जिनेद्र जय जय भवोदधि तारणम्।।
जय वीतराग महान जिनपति विश्वबंध महेश्वरम्।
जय आदि देव सु महादेव सु पूज्य प्रभु परमेश्वरम्।।
जय ज्ञान सूर्य अनन्त गणपति आदिनाथ जिनेश्वरम्।
जय मानतुंग मुनीश पूजित प्रथम जिन तीर्थेश्वरम्।।
मैं भाव पूर्वक करूँ पूजन स्वपद ज्ञान प्रकाशकम्।
दो भेद ज्ञान महान अनुपम अष्ट कर्म विनाशनम्।।

ॐ ह्रीं वृषभनाथ जिनेन्द्र। अत्र अवतर–अवतर संवौषट् इत्याहवानम्।
ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथजिनेन्द्र। अत्र तिष्ठ ठ ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्र। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

जन्म मरण भयहारो स्वामी, आदि नाथ प्रभु को वंदन।
त्रिविध दोष ज्वर हरने को, चरणों में जल करता अर्पण।।
ऋषभदेव के चरण कमल में, मन वच काया सहित प्रणाम।
भक्तामर स्तोत्र पाठ कर, मैं पाऊं निज में विश्राम।

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् नि. स्वाहा।

भव आताप विनाशक स्वामी, आदिनाथ प्रभु को वंदन।
भव दावानल शीतल करने चंदन करता हूँ अर्पण।। ऋषभदेव ....।

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं नि. स्वाहा।

भव समुद्र उद्धारक स्वामी, आदिनाथ प्रभु को वन्दन।
अक्षय पद की प्राप्ति हेतु प्रभु अक्षत करता हूँ अर्पण।। ऋषभदेव

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामति स्वाहा।

काम व्यथा हारक स्वामी, आदिनाथ प्रभु को वन्दन।
मैं कंदर्प दर्प हरने को सहज पुष्प करता अर्पण।। ऋषभदेव ....।

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि. स्वाहा।

क्षुधा रोग के नाशक स्वामी, आदिनाथ प्रभु को वन्दन।
अब अनादि की क्षुधा मिटाऊँ प्रभु नैवेद्यम् करूँ अर्पण।।ऋषभदेव।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि. स्वाहा।

स्वपर प्रकाशक ज्ञान ज्योतिमय, आदिनाथ प्रभु को वन्दन।
मोह तिमिर अज्ञान हटाने दीपक चरणों में अपर्ण।। ऋषभदेव.....।

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि. स्वाहा।

कर्म व्यथा के नाशक स्वामी, आदिनाथ प्रभु को वन्दन।
अष्ट कर्म विध्वंस हेतु भावों की धूप करूँ अर्पण। ऋषभदेव.....।

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपम् निर्वपामति स्वाहा।

नित्य निरंजन महामोक्ष पति, आदिनाथ प्रभु को वन्दन।
मोक्ष सुफल पाने को स्वामी, चरणों में फल है अर्पण।। ऋषभदेव..।

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामति स्वाहा।

जल गंधाक्षत पुष्प सुचरू दीपक सुधूप फल अर्घ सुमन।
पद अनर्घ पाने को स्वामी, चरणों में सादर अर्पण।। ऋषभदेव

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घम् निर्वपामति स्वाहा।

अथाष्टदलकमल अर्घ

भक्तामर–प्रणत–मौलि मणि–प्रभाणा–
मुद्योतकं दलित–पाप–तमो–वितानम्।
सम्यक्प्रणम्य जिन–पाद–युगं युगादा–
वालम्बनं भव जले पततां जनानाम् ।।1।।

अर्घ – ॐ ह्रीं विश्वविघ्नहराय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय ह्रदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

यः संस्तुतः सकल–वाङ्मय–तत्वबोधा–
दुदभूत–बुद्धि–पटुभिः सुर–लोक–नाथैः।
स्त्रोत्रै–र्जगत्–त्रितय–चित्त–हरैरुदारैः
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ।।2।।

अर्घ – ॐ ह्रीं नानामरसंस्तुताय सकलरोगहराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय ह्रदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

बुद्धया विनापि विबुधार्चित–पाद–पीठ।
स्तोतुं समुद्यत–मतिर्विगत–त्रपोऽहम्।
बालं विहाय जल–संस्थितमिन्दु बिम्ब–
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्।।3।।

अर्घ – ॐ ह्रीं मत्यादिसुज्ञानप्रकाशनाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

वक्तुं गुणान्गुण–समुद्र शशाङ्क. कान्तान्
कस्ते क्षमः सुर–गुरू–प्रतिमोऽपि बुद्धया।
कल्पान्त–काल–पवनोद्धत–नक्र–चक्रं
को वा तरीतु–मल–मम्बुनिधिं भुजाभ्याम्।।4।।

अर्घ – ॐ ह्रीं नानादुःखसमुद्रतारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

सोऽहं तथापि तव भक्ति–वशान्मुनीश।
कर्तु स्तवं विगत–शक्तिरपि प्रवृत्तः।
प्रीत्यात्म–वीर्य मविचार्य मृगी मृगेन्द्रं
नाभ्येति किं निज–शिशोः परिपालनार्थम्।।5।।

अर्घ – ॐ ह्रीं सकलकार्य सिद्धिकराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम
त्वद्भक्ति रेव मुखरी कुरुते बलान्माम्।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति
तच्चाम्र–चारू–कलिका–निकरैक हेतु।।6।।

अर्घ – ॐ ह्रीं याचितार्थप्रतिपादनशक्तिसहिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

त्वत्संस्तवेन भव–सन्तति–सन्निबद्धं
पापं क्षणा–त्क्षय–मुपैति शरीरभाजाम्।
आक्रान्त लोकमलि–नीलमशेष माशु
सूर्यांशु भिन्नमिव शार्वरमन्धकारम्।।7।।

अर्घ – ॐ ह्रीं सकलपापफलकुष्टनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

मत्त्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद–
मारभ्यते तनु–धियाऽपि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी–दलेषु
मुक्ता फल द्युति मुपैति ननूद–बिन्दुः ।।8।।

अर्घ – ॐ ह्रीं अनेकसंङ्कटसंसारदुःखनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

जल–कुसुम–सुगन्धै–रक्षतै–र्दीपधूपै,
र्विविह–फल–निवेद्यै–रर्चयामीह देवम्।
सुर–नरवर–सेव्यं दोहदानां वरेशं,
शिव सुखपद धामं प्राणिनां प्राणनाथम्।

अर्घ – ॐ ह्रीं अष्टदलकमलाधिपते श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

अथ षोडशदलकमल अर्घ

आस्तां तव स्तवन मस्त समस्त दोषं
त्वत्संकथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस किरणः कुरूते प्रभैव
पद्माकरेषु जल जानि विकास भाञ्जि।।9।।

अर्घ – ॐह्रीं सकल मनोवांछित फलदात्रे क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

नात्यद्भुतं भुवन भूषण भूत–नाथ।
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्त–मभिष्टुवन्त:।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति।।10।।

अर्घ – ॐ ह्रीं अर्हज्जिनस्मरणजिनसम्भूताय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

दृष्ट्वा भवन्त–मनिमेष–विलोकनीयं
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षु:।
पीत्वा पय: शशिकरद्युति दुग्धसिंधों
क्षारं जलं जलनिधे–रसितुं क इच्छेत् ।।11।।

अर्घ – ॐ ह्रीं सकलतुष्टिपुष्टिकराय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

यै: शान्त–राग–रूचिभि: परमाणुभिस्त्वं
निर्मापितस्–त्रिभुवनैक–ललामभूत।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणव: पृथिव्यां
यत्ते समान मपरं न हि रूपमस्ति।।12।।

अर्घ – ॐ ह्रीं वांछितरूपफलशक्तये क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

वक्त्रं क्व ते सुर नरोरग–नेत्र हारि
नि: शेष–निर्जित–जग–त्त्रितयोपमानम्।
बिम्बं कलङ्कमलिनं क्व निशाकरस्य।
यद्वासरे भवति पाण्डु–पलाशकल्पम्।।13।।

अर्घ – ॐ ह्रीं लक्ष्मीसुखविधायकाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

संपूर्ण–मण्डल–शशाङ्क–कला–कलाप–
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति।
ये संश्रिता–स्त्रिजगदीश्वर–नाथमेकं
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम्।।14।।

अर्घ – ॐ ह्रीं भूतप्रेतादिभयनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि
र्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम्।
कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन
किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित्।।15।।

अर्घ – ॐ ह्रीं मेरुवन्मनोबलकरणाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

निर्धूम–वर्तिर–पवर्जित–तैलपूरः
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ! जगत्प्रकाशः।।16।।

अर्घ – ॐ ह्रीं त्रैलोक्य लोक वशंकराय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

नास्तं कदाचि–दुपयासि न राहुगम्यः
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भो–धरोधर–निरुद्ध–महाप्रभावः
सूर्यातिशायि–महिमासि मुनीद्र! लोके।।17।।

अर्घ – ॐ ह्रीं पापान्धकारनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठांग महानिमित्त – कुशलाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

नित्योदयं दलित–मोह–महान्धकारं

गम्यं न राहु वदनस्य न वारिदानाम्।

विभ्राजते तव मुखाब्ज–मनल्प–कान्ति

विद्योतय–ज्जगदपूर्व–शशाङ्क–बिम्बम्।।18।।

अर्घ – ॐ ह्रीं चन्द्रवत्सर्वलोकोद्योतनकराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा

युष्मन्मुखेन्दु–दलितेषु तमः –सुनाथ।

निष्पन्न–शालि–वन–शालिनि जीव–लोके

कार्यं कियज्–जलधरैर्जल–भार–नम्रैः ।।19।।

अर्घ – ॐ ह्रीं सकलकालुष्यदोषनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं

नैवं तथा हरि–हरादिषु नायकेषु।

तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्वं

नैवं तु काच–शकले किरणाकुलेऽपि।।20।।

अर्घ – ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्रकाशितलोकालोकस्वरूपाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

मन्ये वरं हरि–हरादय एव दृष्टा

दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।

किं वीक्षितेन भवता भुति येन नान्यः

कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि।।21।।

अर्घ – ॐ ह्रीं सर्वदोषहरशुभदर्शनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र–रश्मिं
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुर–दंशु–जालम्।।22।।

अर्घ – ॐ ह्रीं अद्भुतगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

त्वामा–मनन्ति मुनयः परमं पुमांस
मादित्य–वर्णममलं तमसः पुरस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं
नान्यः शिवः शिव–पदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः।।23।।

अर्घ – ॐ ह्रीं सहस्रनामाधीश्वराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

त्वामव्ययं विभु–मचिन्त्य–मसंख्य–माद्यं
ब्रह्मा–ण–मीश्वर मनन्त–मनङ्ग–केतुम्।
योगीश्वरं विदित–योगमनेक–मेकं
ज्ञान–स्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः।।24।।

अर्घ – ॐ ह्रीं मनोवांछितफलदायकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

हत्वा कर्मरिपून् बहून् कटुतरान, प्राप्तं परं केवलं,
ज्ञानं येन जिनेन मोक्षफलदं, प्राप्तं दुतं धर्मजम्।
अर्घेणात्र सुपूज्यामि जिनपं श्रीसोमसेनस्तवहं,
मुक्तिश्रीष्वभिलाषया जिन! विभो! देहिप्रभो! वांछितम्।।

अर्घ – ॐ ह्रीं हृदयस्थितषोड़शदलकमलाधिपतये श्री वृषभदेवाय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं नि. स्वाहा।

अथ चतुर्विंशतिदलकमल अर्घ

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित–बुद्धि–बोधात्
त्वं शङ्करोऽसि भुवन–त्रय शङ्करत्वात्।
धातासि धीर शिव–मार्ग–विधे र्विधानात्
व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि।।25।।

अर्घ – ॐ ह्रीं षड्दर्शनपारङ्गताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

तुभ्यं नम–स्त्रिभुवनार्ति हराय नाथ!
तुभ्यं नमः क्षिति–तलामल–भूषणाय।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय
तुभ्यं नमो जिन भवोदधि शोषणाय।।26।।

अर्घ – ॐ ह्रीं नानादुःखविलीनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणै रशेषैस्
त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश!।
दोषै रुपात्त विविधाश्रय–जात–गर्वैः
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि।।27।।

अर्घ – ॐ ह्रीं सकलदोषनिर्मुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

उच्चैरशोक–तरू–संश्रितमुन्मयूख–
माभाति रूप ममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लस–त्किरणमस्त–तमो–वितानं
बिम्बं रवेरिव पयोधर–पार्श्ववर्ति।।28।।

अर्घ – ॐ ह्रीं अशोकतरूविराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

सिंहासने मणि–मयूख–शिखा–विचित्रे
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलता–वितानं
तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्र–रश्मेः।।29।।

अर्घ – ॐ ह्रीं मणिमुक्ताखचितसिंहासनप्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

कुन्दावदात–चल–चामर–चारु–शोभं
विभ्राजते तव वपुः कलधौत–कान्तम्।
उद्यच्छशाङ्क–शुचि–निर्झर–वारि–धार–
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ।।30।।

अर्घ – ॐ ह्रीं चतुः षष्टिचामरप्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

छत्र–त्रयं तव विभाति शशाङ्क–कान्त–
मुच्चैः स्थितं स्थगित–भानु–कर–प्रतापम्।
मुक्ता–फल–प्रकर–जाल–विवृद्ध–शोभं
प्रख्यापय–त्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ।।31।।

अर्घ – ॐ ह्रीं छत्रत्रयप्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

गम्भीर–तार–रव–पूरित–दिग्विभागस्
त्रैलोक्य–लोक–शुभ–सङ्गम भूति–दक्षः।
सद्धर्मराज–जय–घोषण–घोषकः सन्
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी।।32।।

अर्घ – ॐ ह्रीं त्रैलोक्याज्ञाविधायिने क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

मन्दार–सुन्दर–नमेरू सुपारिजात
सन्तानकादि–कुसुमोत्कर–वृष्टि–रूद्धा।
गन्धोद–बिन्दु–शुभ–मन्द–मरूत्प्रपाता
दिव्या दिवः पतित ते वचसां ततिर्वा।।33।।

अर्घ – ॐ ह्रीं समस्तपुष्पजातिवृष्टिप्रातिहार्य क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

शुम्भत्प्रभा–वलय–भूरि विभा विभोस्ते
लोक–त्रये–द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती।
प्रोद्यद्दिवाकर–निरन्तर भूरि–संख्या–
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोम–सौम्याम्।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लो सहि-पत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

अर्घ – ॐ ह्रीं कोटिभास्कर प्रभामण्डितभामण्डलप्रातिहार्य क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

स्वर्गापवर्ग गम मार्ग विमार्गणेष्टः
सद्धर्म तत्त्व कथनैक पटुस्त्रिलोक्याः।
दिव्य–ध्वनिर्भवति ते विशदार्थ–सर्व–
भाषा स्वभाव परिणाम गुणैः प्रयोज्यः।।35।।

अर्घ – ॐ ह्रीं जलधरपटलगर्जितसर्वभाषात्मकद्वादशयोजनप्रमाण–दिव्य धवनि प्रातिहार्य क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

उन्निद्र–हेम नव–पङ्कज–पुञ्ज–कान्ति
पर्युल्लसन्नख–मयूख–शिखाभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ।।36।।

अर्घ – ॐ ह्रीं पादन्यासे पद्मश्रीयुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

इत्थं यथा तव विभूति–रभूज्जिनेन्द्र!
धर्मोपदेशन विधौ न तथा परस्य।
यादृक्प्रभा दिनकृत: प्रहतान्धकारा
तादृक्कुतो ग्रह–गणस्य विकासिनोऽपि।।37।।

अर्घ – ॐ ह्रीं धर्मोपदेशसमये समवशरणादि लक्ष्मीविभूति विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

श्च्योतन्मदाविल–विलोल–कपोल–मूल–
मत्त–भ्रमद्–भ्रमर–नाद–विवृद्ध–कोपम्।
ऐरावता–भमि–भमुद्धत मापतन्तं
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम्।।38।।

अर्घ – ॐ ह्रीं हस्त्यादिगर्वदुर्द्धरभयनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

भिन्नेभ–कुम्भ गलदुज्जवल–शोणिताक्त–
मुक्ता–फल–प्रकर भूषित भूमि–भाग:।
बद्ध क्रम: क्रम–गतां हरिणाधिपोऽपि
नाक्रामति क्रम–युगाचल–संश्रितं ते।।39।।

अर्घ – ॐ ह्रीं युगादिदेवनामप्रसादात् केशरिभयविनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

कल्पान्त–काल–पवनोद्धत–वह्नि–कल्पं
दावानलं ज्वलित मुज्जवल मुत्स्फुलिङ्गम्।
विश्व जिघत्सुमिव सन्मुखमापतन्तं
त्वन्नाम–कीर्तन–जलं शमयत्यशेषम्।।40।।

अर्घ – ॐ ह्रीं संसाराग्नितापनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

रक्तेक्षणं समद–कोकिल–कण्ठ–नीलं
क्रोधोद्धतं फणिन मुत्फण मापतन्तम्।
आक्रामति क्रम–युगेण निरस्त–शङ्कस्
त्वन्नाम–नाग–दमनी हृदि यस्य पुंस:।।41।।

अर्घ – ॐ ह्रीं त्वन्नामनागदमनीशक्तिसम्पन्नाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

वल्गत्तुरङ्ग गज–गर्जित–भीमनाद–
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम्।
उद्यद्दिवाकर–मयुख–शिखापविद्धं
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति।।42।।

अर्घ – ॐ ह्रीं संग्राममध्ये क्षेमङ्कराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

कुन्ताग्र–भिन्न–गज–शोणित–वारिवाह–
वेगावतार तरणातुर–योध भीमे।
युद्धे जयं–विजित दुर्जय जेय पक्षास्
त्वत्पाद पङ्कज वनाश्रयिणो लभन्ते।।43।।

अर्घ – ॐ ह्रीं वनगजादिभयनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

अम्भोनिधौ क्षुभित भीषण नक्र चक्र
पाठीन पीठ भय दोल्वण वाडवाग्नौ।
रङ्गत्तरङ्गशिखर स्थित यान पात्रास्
त्रासं विहाय भवत: स्मरणाद् व्रजन्ति।।44।।

अर्घ – ॐ ह्रीं संसाराब्धितारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

उद्भूत भीषण जलोदर भार भुग्ना:
शोच्यां दशा–मुपगताश–च्युत जीविताशा:।
त्वत्पाद पङ्कज रजोमृत दिग्ध देहा
मर्त्याभवन्ति मकरध्वज तुल्यरूपा: ।।45।।

अर्घ – ॐ ह्रीं दाहतापजलोदराष्टदशकुष्टसन्निपातादिरोगहराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

आपाद कण्ठमुरू श्रृङ्खल वेष्टिताङ्गा
गाढं बृहन्निगड कोटि निघृष्ट जङ्घा:।
त्वन्नाम मन्त्रमनिशं मनुजा: स्मरन्त:
सद्य: स्वयं विगत बन्ध भया भवन्ति।।46।।

अर्घ – ॐ ह्रीं नानाविधकठिनबन्धनदूरकरणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

मत्तद्विपेन्द्र मृगराज दवानलाहि–
संग्राम वारिधि महोदर बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते।।47।।

अर्घ – ॐ ह्रीं बहुविधविघ्नविनाशनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धां
भक्त्या मया रूचिर वर्ण विचित्र पुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठ गतामजस्रं
तं मानतुङ्ग मवशासमुपैति लक्ष्मी:।।48।।

अर्घ – ॐ ह्रीं सकलकार्यसधनसामर्थाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

नाना–विघ्नहरं प्रताप–जनक, संसार–पारप्रदं,
संस्तुत्यं श्रीदं करोमि सततं, श्रीसोमसेनोऽप्यहम्।
पूर्णार्घेण मुदा सुभव्यसुखदं, आदीश्वराख्या परं,
हीरापण्डितसूपरोधवशतः स्तोत्रस्य पूजाविधिम्।।49।।

अर्घ – ॐ ह्रीं हृदयस्थिताय चतुर्विंशतिदलकमलाधिपतये क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

वरसुगन्ध–सुतन्दुलपुष्पकैः, प्रवरमोदक–दीपक–धूपकैः।
फल भरैः परमात्म–प्रदत्तकं, प्रवियजे जयदं धनदं जिनम्।।50।।

अर्घ – ॐ ह्रीं हृदयस्थिताय अष्टचत्वारिंशत दलकमलाधिपतये क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं नि. स्वाहा।

जलगन्धाष्टभिर्द्रव्यै–र्युगादि पुरूषं यजे।
सोमसेनेन संसेव्यं, तीर्थसागर–चर्चितम्।।
।। इत्याशीर्वादः! पुष्पान्जलिं क्षिपेत्।।

गाड़ी खड़ी रे तैयार, चलो रे भाई सिद्धपुरी।
सम्यक दर्शन टिकट कटाओ, सम्यक ज्ञान संवारो।
सम्यक चारित महिमा से, आठों कर्म निवारो।।

भीतर देह घिनावनी, रोगों का है धाम।
जब तक परदा ठीक है, कर ले अपना काम।।

श्री भक्तामर जी पाठ रिद्धि–सिद्धी मंत्र के अर्घ

1. ॐ ह्रीं अर्हं अवधिज्ञानबुद्धि–ऋद्धये नमः निर्वपामिति स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं अर्हं मनःपर्ययज्ञानबुद्धि–ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानबुद्धि–ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं अर्हं बीजबुद्धि– ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं अर्हं कोष्ठज्ञानबुद्धि– ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं अर्हं पदानुसारिबुद्धि– ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
7. ॐ ह्रीं अर्हं संभिन्नश्रोतृत्वबुद्धि– ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
8. ॐ ह्रीं अर्हं दूरास्वादित्वबुद्धि– ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
9. ॐ ह्रीं अर्हं दूरस्पर्शत्वबुद्धि– ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
10. ॐ ह्रीं अर्हं दूरघ्राणत्वबुद्धि– ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
11. ॐ ह्रीं अर्हं दूरश्रवणबुद्धि– ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
12. ॐ ह्रीं अर्हं दूरदर्शनत्वबुद्धि– ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं दशपूर्वित्वबुद्धि– ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दशपूर्वित्वबुद्धि– ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
15. ॐ ह्रीं अर्हं अष्टांगमहानिमित्तबुद्धि– ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
16. ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञा श्रमणत्वबुद्धि– ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
17. ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्येकबुद्धि– ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
18. ॐ ह्रीं अर्हं वादित्वबुद्धि– ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
19. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविक्रिया– ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
20. ॐ ह्रीं अर्हं नमस्तलगामिचारणक्रिया–ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
21. ॐ ह्रीं अर्हं जलचारणक्रिया – ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
22. ॐ ह्रीं अर्हं जंघाचारणक्रिया– ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
23. ॐ ह्रीं अर्हं फलपुष्पपत्रचारणक्रिया– ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
24. ॐ ह्रीं अर्हं अग्निधूमचारिणक्रिया– ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
25. ॐ ह्रीं अर्हं मेघधाराचारणक्रिया– ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
26. ॐ ह्रीं अर्हं तन्तुचारणक्रिया– ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

27. ॐ ह्रीं अर्हं ज्योतिश्चारणक्रिया– ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

28. ॐ ह्रीं अर्हं मरूच्चारणक्रिया– ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

29. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वतपः – ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

30. ॐ ह्रीं अर्हं अघोरब्रह्मचारित्वतपः ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

31. ॐ ह्रीं अर्हं मनोबल ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

32. ॐ ह्रीं अर्हं वचनबल – ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

33. ॐ ह्रीं अर्हं कायबल – ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

34. ॐ ह्रीं अर्हं आमर्षोषधि – ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

35. ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्वेलौषधि – ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

36. ॐ ह्रीं अर्हं जल्लौषधि– ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

37. ॐ ह्रीं अर्हं मल्लौषधि – ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

38. ॐ ह्रीं अर्हं विप्रुषौषधि – ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

39. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वौषधि – ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

40. ॐ ह्रीं अर्हं मुखनिर्विष – ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

41. ॐ ह्रीं अर्हं दृष्टिनिर्विष – ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

42. ॐ ह्रीं अर्हं दृष्टिविष – ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

43. ॐ ह्रीं अर्हं क्षीरस्रावि – ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

44. ॐ ह्रीं अर्हं मधुस्राविरस – ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

45. ॐ ह्रीं अर्हं अमृतस्राविरस – ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

46. ॐ ह्रीं अर्हं सर्पिःस्राविरस – ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

47. ॐ ह्रीं अर्हं अक्षीणमहानस – ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

48. ॐ ह्रीं अर्हं अक्षीणमहालय – ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

ऋद्धि मंत्र अर्घ

1. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं अर्घं नि. स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं अर्घं नि. स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं अर्घं नि. स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं अर्घं नि. स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं अर्घं नि. स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं अर्घं नि. स्वाहा।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं अर्घं नि. स्वाहा।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पादाणुसारीणं अर्घं नि. स्वाहा।
9. ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोदाराणं अर्घं नि. स्वाहा।
10. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धीणं अर्घं नि. स्वाहा।
11. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धीणं अर्घं नि. स्वाहा।
12. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धीणं अर्घं नि. स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ऋजुमदीणं अर्घं नि. स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विपुलमदीणं अर्घं नि. स्वाहा।
15. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं अर्घं नि. स्वाहा।
16. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं अर्घं नि. स्वाहा।
17. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठांगमहानिमित्त कुशलाणं अर्घं नि. स्वाहा।
18. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउयणयट्ठिपत्ताणं अर्घं नि. स्वाहा।
19. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं अर्घं नि. स्वाहा।
20. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं अर्घं नि. स्वाहा।
21. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं अर्घं नि. स्वाहा।
22. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामिणं अर्घं नि. स्वाहा।
23. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं अर्घं नि. स्वाहा।
24. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं अर्घं नि. स्वाहा।
25. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं अर्घं नि. स्वाहा।
26. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं अर्घं नि. स्वाहा।
27. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं अर्घं नि. स्वाहा।
28. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं अर्घं नि. स्वाहा।
29. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं अर्घं नि. स्वाहा।

30. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं अर्घं नि. स्वाहा।
31. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणपरक्कमाणं अर्घं नि. स्वाहा।
32. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरबंभचारिणं अर्घं नि. स्वाहा।
33. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं अर्घं नि. स्वाहा।
34. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खिल्लोसहिपत्ताणं अर्घं नि. स्वाहा।
35. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं अर्घं नि. स्वाहा।
36. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं अर्घं नि. स्वाहा।
37. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं अर्घं नि. स्वाहा।
38. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणोबलीणं अर्घं नि. स्वाहा।
39. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचनबलीणं अर्घं नि. स्वाहा।
40. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं अर्घं नि. स्वाहा।
41. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं अर्घं नि. स्वाहा।
42. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवाणं अर्घं नि. स्वाहा।
43. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवाणं अर्घं नि. स्वाहा।
44. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवाणं अर्घं नि. स्वाहा।
45. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अख्खीणमहाणसाणं अर्घं नि. स्वाहा।
46. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं अर्घं नि. स्वाहा।
47. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धिदयाणं वडठमाणाणं अर्घं नि. स्वाहा।
48. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वसाहूणं अर्घं नि. स्वाहा।

–: जाप :–

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्रीवृषभनाथतीर्थंकराय नमः।
अनेन मंत्रेण लवङ्गरष्टोत्तरशतं (108) जाप्यं विधेयम्।।

तकदीर संवरते देर नहीं, तकदीर बदलते देर नहीं।
कर्मों का फल सब भोगेंगे, देर है अंधेर नहीं।।

दौल सम सुन चेत सयाने, काल वृथा मल खोवे।
यह नर भव फिर मिलन कठिन है, जो सम्यक नहीं होवे।।

जयमाला

वृषभांकित जिनराज पद वंदू बारम्बार।
वृषभदेव परमात्मा पर सौख्य आधार।।
भक्तामर की यशो पताका फहराते हैं साधु भक्त जन।
भाव पूर्वक पाठ मात्र से कट जाते सब संकट तत्क्षण।।
भक्तामर रच मानतुंग ने निज परका कल्याण किया था।
अड़तालीस काव्य रचना कर शुभ अमरत्व प्रदान किया था।।
नृपकारा से मुक्त हुए मुनि श्रुत उपदेश महान दिया था।
आदिनाथ की स्तुति करके निज स्वरूप का ध्यान किया था।।
मैं भी प्रभु महिमा गाकर भाव पुष्प करता हूँ अर्पण।
त्रैलोक्येश्वर महादेव जिन आदिदेव को सविनय वन्दन।।
नाभिराय मरूदेवी के सुत आदिनाथ तीर्थंकर नामी।
आज आपकी शरण प्राप्त कर अति हर्षित हूँ अन्तर्यामी।।
मैंने कष्ट अनंतानंत उठाए हैं अनादि से हे! स्वामी।
आत्म ज्ञान बिन भटक रहा हूँ चारों गति में त्रिभुवन नामी।।
नर सुर नारक पशु पर्यायों में प्रभु मैंने अति दुख पाये।
जड़ पुद्गल तन अपना माना निज चैतन्य गीत ना गाये।।
कभी नर्क में कभी स्वर्ग में कभी निगोद आदि में अटका।
सुखाभास की आकांक्षा ले चार कषायों में ही अटका।।
एक बार भी कभी भूलकर निज अवसर स्वरूप का किया न दर्शन।
द्रव्यलिंग भी धारा मैंने किन्तु न भाया आत्म चिन्तवन।।
आज सुअवसर मिला भाग्य से भक्तामर का पाठ सुन लिया।
शब्द अर्थ भावों को जाना निज चैतन्य स्वरूप गुन लिया।।
अब मुझ को विश्वास हो गया भव का अन्त निकट आया है।
भक्तामर का भाव ह्रदय में मेरे नाथ उमड़ आया है।।
भेद ज्ञान की निधि पाऊंगा स्वपर भेद विज्ञान करूंगा।
शुद्धात्मानुभूति के द्वारा अष्ट कर्म अवसान करूँगा।।

इस पूजन का सम्यक् फल प्रभु मुझको आप प्रदान करो अब।
केवल ज्ञान सूर्य की पावन किरणों का प्रभु दान करो अब।।
क्रोध मान माया लोभादिक सर्व कषाय विनष्ट करूँ मैं।
वीतराग निज पद प्रगटाऊं भव बन्धन के कष्ट हरूँ में।।
स्वर्गादिक की नहीं कामना भौतिक सुख से नहीं प्रयोजन।
एक मात्र ज्ञायक स्वभाव निज का ही आश्रय लूं हे भगवान।।
विषय भोग की अभिलाषाएँ पलक मारते चूर करूँ मैं।
शाश्वत निज अखंड पद पाऊँ पर भावों को दूर करूँ मैं।।
मिथ्यात्वादिक पाप नष्ट कर सम्यक् दर्शन को प्रगटाऊँ।
सम्यक् ज्ञान चरित्र शक्ति से घाति अघाति कर्म विघटाऊँ।।
ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्ध्यम् नि. स्वाहा।

भक्तामर स्त्रोत की महिमा अगम अपार।
भाव भावना जो करें हो जाएँ भव पार।।

।। इत्याशीर्वाद ! परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

दीर्घायुरस्तु, शुभमस्तु, सुकीर्तिरस्तु, सुद्बुद्धिरस्तु, धनधान्य समृद्धिरस्तु, आरोग्यमस्तु, विजयोऽस्तु, महोऽस्तु, पुत्रपौत्रोद्भवोऽस्तु तव सिद्धपति प्रसादात्।।